ख़्वाबों के आसरे कटी तमाम उम्र

भारतीय फिल्मी जगत के सुप्रसिद्ध उर्दू शायर स्व. साहिर लुधियानवी की जीवनी पर 'साहिर समग्र' में शायर की ग़ज़लें, सानुप्रास, नज़्म की प्रकार, छंदबनी और पांच-पांच मिस्रों की नज़्मों में अपनी समग्रता के साथ किताब की शक्ल में सामने आई है। इसका संचयन, सम्पादन व लिप्यांतरणकर्ता आशा प्रभात ने किया है। इस पुस्तक में चार खंड हैं। साहिर लुधियानवी को जनसाधारण आमतौर पर फ़िल्मों के गीतकार के रूप में ही जानते हैं। लेकिन तथ्य यह है कि फ़िल्में उनके जीवन में बहुत बाद में आई, उससे पहले ये एक प्र÷तिशील शायर के तौर पर अपनी बड़ी पहचान बना चुके थे। फ़िल्मी दुनिया ने उन्हें रोज़गार दिया। उन्होंने फ़िल्मी दुनिया को कुछ ऐसे अमर उपहार दिए जिन्हें उन्होंने अपने ऊबड़-खाबड़ और गहरी उदासी में बीते जीवन में कमाया था। एक ऐसे परिवार में पैदा होकर, जिसका शायरी और उर्दू साहित्य से दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं था, और ऐसे पिता का पुत्र होकर जिसके साथ उनके सम्बन्ध कभी पिता-पुत्र जैसे नहीं रहे और एक ऐसे समाज में जी कर जिसका सस्तापन, नाइंसाफ़ी उनकी उदास आंखों से बचकर निकल नहीं पाती थी, उन्होंने वह कमाया जिसे भले ही उस वक्त के समालोचकों ने बहुत मान नहीं दिया, लेकिन जो आम आदमी की यादों में हमेशा के लिए पैठ गया। फ़िल्मों में आने से पहले ही वे अपने समय के सबसे लोकप्रिय और चहेते शायरों की गिनती में शामिल हो चुके थे। साहिर की ऐसी कई नज़्में, ग़ज़लें और गीत भी हैं, जिनमें उन्होंने समाज की आलोचना दो-टूक लहजे में की है। प्रगतिशील आन्दोलन से जुड़े साहिर की चिन्ताओं में गांव में भूख और अकाल से जूझ रहे किसानों का दर्द एक जैसी गहराई से आया है, जिसका मतलब यही है कि दुःख को देखना, जीना और पकड़ना, शायर के रूप में यही उनका एकमात्र कौशल था, और इसी के विस्तार में उन्होंने हर माथे की हर सिलवट को पिरोकर आकृति बना दिया। यह किताब उनकी रचनाओं का समग्र है, अभी तक उपलब्ध उनकी तमाम ग़ज़लों, नज़्मों और गीतों को इसमें इकट्ठा करने की कोशिश की गई है।

नारी की स्वतंत्रता में परतंत्रता का आकलन

अमेरिका निवासी हिंदी लेखिका सुदर्शन प्रियदर्शनी के दो लघु उपन्यासों-'अरी ओ कनिका' तथा 'सूरज नहीं उगेगा' का पुनर्मुद्रित रूप एक जिल्द में प्रस्तुत किया गया है। प्रथम उपन्यास 'अरी ओ कनिका' की मुख्य समस्या है अपने पति को अतीत की उसकी गर्ल-फ्रेंड के साथ बांटने की। अमेरिकी वातावरण में ही यह सोच संभव है और बिना विवाह के लिव-इन-रिलेशंस में पति को उसके साथ रहने की छूट देना भी वहां के संस्कार हो सकते हैं। भारतीय चिंतन में तलाकशुदा रहने और विधवा जीवन जीने की संभावना है। यहां वासुदेव और वीना का जीवन त्रिशंकु बना है। अपनी उदारता का प्रदर्शन करते हुए वीना ने अपने प्रेमल पति को शिवि के हवाले कर तो दिया है, किंतु अपनी तीन संतानों के साथ रहती हुई वीना, मूलतः भारतीय नारी का दर्द बन गई है। अपने प्रेम भरे जीवन में तीसरे की आग महसूसते हुए उसे दो अन्य घटनाओं से पुष्टि मिलती है-चिनुली-कांतमणि तथा लीला-कामता प्रसाद के युगलों का संदर्भ भी वह अपनी नियति के साथ मिलाकर देखती है और अपनी उदारता की भूल पर पश्चाताप करती है। अपनी पुत्री कनिका को समझाते हुए अपने अनुभव बताती है कि कठोरता में कोमलता का अक्स ही नारीत्व है। इस कथानक में लेखिका ने पाश्चात्य और पौरस्त्य संस्कारों में खींचतान खड़ी की है, समाधान कोई नहीं दे पाई। शायद इसलिए कि आलेख पुराना है, परिवर्तन करना जरूरी नहीं समझा गया। हमारी मान्यता है कि लेखिका यदि इस उपन्यास को आज पुनः लिखे तो बहुत-सी बातें जोड़े बगैर रह नहीं पाएगी। बाल्यावस्था में मां से जो आशीर्वाद वीना को मिलता था; वातावरण, संस्कार, आधुनिक सोच और अल्ट्रा होने का दंश वह अपनी पुत्री कनिका की झोली में नहीं डालेगी। सच है व्यक्ति को सही सूझ बादाम खाने से नहीं, धक्के खाने से आती है। दूसरा लघु उपन्यास है 'सूरज नहीं उगेगा'। टूटते संबंधों की कहानी है यह। कहावत है 'गरीबी में आटा गीला।' बेटी के लिए माता-पिता का संबंध यदि टूट जाता है तो मायके के समस्त संबंध भाई-भाभी, बहिन-बहनोई और उनके बच्चों में बेमुरव्वती छा जाती है। लेखिका ने 'सूरज नहीं उगेगा' में इस स्थिति का अंकन किया है और टूटते हुए संबंधों का दूर तक आकलन किया है। आभा का अपनी बड़ी भाभी से गहरा प्रेम है, किंतु जबसे उसने अपनी इच्छा से अचल के साथ विवाह किया है, माता-पिता की उपेक्षा के कारण मायके के अन्य सभी संबंध भी उपेक्षित हो गए हैं। भाभी संभवतः आज भी आभा से प्यार करती हो, किंतु खुलकर सामने आने का साहस उसमें नहीं। अकस्मात भाभी की मृत्यु का समाचार आभा को झकझोर देता है। अचल उसके मन को जानकर आभा को बड़े भाई के घर मातम-पुर्सी के लिए जाने की अनुज्ञा देता है। लेखिका ने वास्तव में वर्तमान के संबंधों में उपेक्षा और बेमुरव्वती की तस्वीर पेश की है। भाभी की यादों में आभा को संबंधों का वास्तव दिखता है, किंतु क्या वह कभी पुनः सूरज बन चमक सकता है-उत्तर अंतर्निहित है 'सूरज नहीं उगेगा।' लेखिका ने उपन्यास के सोच स्तर पर दो बातों को उभारने का प्रयास किया है - नारी विमर्श के नाते वह बार-बार नारी की स्वाधीनता में परतंत्रता का आकलन करती है और 'नारी लाख उन्नत होकर भी स्वान्तः निर्णीत नहीं हो सकेगी' की घोषणा करती है। दूसरी बात समाज के मिथ्याचार का खुलकर चित्रण किया है, लेखिका ने। समाज के लोगों के घड़ियाली आंसू देखकर किसी निर्णय पर पहुंचना खतरनाक हो सकता है, सावधान करती है लेखिका! दोनों लघु उपन्यासों के अंत में 'घेरे' और 'त्रिशंकु' नाम के दो कहानीनुमा गद्य जोड़े हैं। यहां इनके जुड़ने से इनका अवमूल्यन तो हुआ ही, ऊपर कहे दोनों उपन्यासों के प्रति भी बेरुखी-सी दिखने लगी है। उनकी गरिमा नहीं बनी रह सकी।

जड़ों में जीवन मूल्यों की तलाश

डॉ. कुमुद रामानंद बंसल एक समर्पित साहित्य साधिका तो हैं ही, एक शिक्षाविद् के रूप में भी जानी जाती हैं। उनके अब तक 6 कविता, संग्रह, 1 तांका संग्रह, 4 हाइकु संग्रह व एक अंग्रेजी कविताओं का संग्रह उपलब्ध हैं। छांदिक अनुशासन में ढली उनकी कविता में आंवे में पके हुए बर्तन की ठनक मौजूद है। अपने समवेत पाठ में कुमुद की कविता जीवन का एक विहंगम परिदृश्य उपस्थित करती है। डॉ. कुमुद रामानन्द बंसल मुख्यतः और मूलतः एक कवयित्री हैं। यही कारण है कि उनकी सद्यःप्रकाशित कृति 'जड़ों की तलाश एक सुखद अनुभव' है तो उनके परिवार की दस पीढ़ियों का इतिहास। वास्तव में यह कृति एक भव्य साहित्यिक अनुष्ठान के रूप में सामने आई है। आज जब व्यक्ति इतना अधिक आत्मकेंद्रित हो गया है कि उसे अपनी तीसरी पीढ़ी के पुरखों का ही ज्ञान नहीं होता, तब ऐसे में अपनी जड़ों की तलाश का संकल्प वास्तव में अद्भुत है। दरअसल, यह एक कालखंड के राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिदृश्य का आईना भी है। यही नहीं, इस कृति में धर्म, दर्शन, अध्यात्म की त्रिवेणी भी प्रवाहमान है और इसके माध्यम से जो सारभूत सत्य उभरकर सामने आया है वह बुद्धम् शरणम् गच्छामि का है। इस कृति का 'धर्माचरण' खंड इस मान्यता की पुष्टि करता है। इस कृति को लिखने की प्रेरणा लेखिका को कैसे मिली, यह लेखिका से ही जानें; मैंने दिसंबर 27, 2013 को व्हाट्स एप पर एक समूह बनाया। धीरे-धीरे अनेक सदस्य जुड़े। परस्पर संवाद बढ़ने लगा। बोया गया बीज अंकुरित होने लगा। 'जड़ों की तलाश' शुरू हुई। कैसे एक सूत्र में पिरो पाऊंगी ऐसे विशाल कुटुम्ब को जिसके सदस्य कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, झारखंड, राजस्थान, पंजाब इत्यादि अनेक प्रदेशों में फैले हुए हैं?10 अध्याय और 16 अनुभागों में रचित यह केवल एक परिवार का इतिहास ही नहीं है, यह मानवीय मूल्यों के प्रति अथाह समर्पण की भी गाथा कहता है। सिरसा के एक धनाढ्य परिवार की समाज के सबसे नीचे पायदान पर खड़े लोगों के प्रति ऐसी ममता सचमुच वरेण्य है। सिरसा में नगर परिषद का गठन नहीं हुआ था, तब इस परिवार के लाला फतेहचंद ने पंचायत के माध्यम से पंच परमेश्वर के रूप में इस नगर को अपनी सेवाएं दीं। समाज की अर्थव्यवस्था के संवर्द्धन के दृष्टिगत इस परिवार के राय बहादुर आत्माराम ने 1915 में एक कोअपरेटिड बैंक लिमिटेड सोसायटी की स्थापना की। यही संस्था अब 'सिरसा कोआपरेटिव बैंक' के नाम से जानी जाती है। आस्था के केंद्र मगा बाबा के बारे में लेखिका ने बड़ी ही शोधात्मक जानकारी उपलब्ध कराई है। लेखिका ने बहुत तटस्थ भाव से अपने इतिहास की प्रस्तुति की है। स्थान-स्थान पर जो अभिलेख, साक्ष्य और चित्र उपलब्ध कराए गए हैं, उससे यह कृति एक शोध-कृति के रूप में सामने आई है। वास्तव में डॉ. कुमुद रामानंद बंसल की इस सद्यः प्रकाशित कृति 'जड़ों की तलाश एक सुखद अनुभव' के माध्यम से हम उन जीवन-मूल्यों के आरपार सहसा ही झांक सकते हैं जो जीवन को जीने योग्य तो बनाते ही हैं, हमारे समय की अमूल्य धरोहर भी हैं।

यथार्थबोध कराते नाटक

प्रेम और पत्थर' बहुआयामी साहित्यिक व्यक्तित्व की धनी एवं बाल कथाकार वर्षा दास का सद्य प्रकाशित रेडियो नाट्य संकलन है। इसमें इनके द्वारा अन्य लेखकों की तीन कहानियों एवं एक लोक कथा के रूपान्तरण रूप में चार रेडियो नाटक क्रमशः प्रेम और पत्थर, बिन्दी, मरा हुआ, और जोसल-तोरल संकलित हैं। पहला नाटक 'प्रेम और पत्थर' डॉ. लोकनाथ भट्टाचार्य की बांग्ला कहानी 'प्रेम और पात्थर', दूसरा नाटक 'बिन्दी' लाभुबहन मेहता की गुजराती कहानी 'बिन्दी', तीसरा नाटक 'मरा हुआ' डॉ. लोकनाथ भट्टाचार्य की गुजराती कहानी 'एकटि कूकूरेर खून' और चौथा नाटक 'जोसल-तोरल' एक गुजराती लोक कथा पर आधारित है। प्रस्तुत संकलन में शामिल नाट्य आलेख कुछ लम्बे ज़रूर हैं, किन्तु इनमें उठाई गई समस्याएं पाठकों की परिवेशगत समस्याएं हैं। सभी नाटक यथार्थ के अधिक करीब लगते हैं। विषय-वस्तु एवं संदेश की दृष्टि से 'प्रेम और पत्थर' इस बात को प्रमाणित करता है कि मन में आस्था और प्रेम पैदा होने पर इनसान पत्थर के भ÷वान को भी किसी भी कीमत पर नहीं बेचना चाहता है। नाटक 'प्रेम और पत्थर' में भी ऐसा ही होता है। दिप्लेन्द्र और उनकी पत्नी चिन्ता उनके पाण्डिचेरी आवास पर स्थित शिव की एक प्रस्तर-प्रतिमा से बेहद प्रेम करते हैं। किसी काम से उनसे मिलने आया सुरेन नामक व्यक्ति इस प्रतिमा को किसी भी कीमत पर खरीदना चाहता है और जब वह पाता है कि दिप्लेन्द्र और उसकी पत्नी चिन्ता उसे यह प्रतिमा किसी भी कीमत पर नहीं देंगे, तो वह इसे धोखे से हथिया लेता है। दूसरा नाटक 'बिन्दी' अपने शीर्षक से ही उस सामाजिक परम्परा के निर्वहन की ओर संकेत करता है, जिसके चलते कोई औरत अपनी आशा के विपरीत दाम्पत्य-जीवन अथवा उससे जनित विकट परिस्थितियों को भले ही मन से स्वीकार न करे, किन्तु शरीर के नाम पर उसे केवल सात फेरे ले लेने मात्र से ही पति के साथ जन्म-जन्मान्तर के बंधन में बंध जाना पड़ता है। नाटक 'मरा हुआ' में एक पालतू कुत्ते की मौत को रहस्यमय ढंग से प्रस्तुत करके लेखिका (नाट्य रूपान्तरकार) ने मानवीय संबंधों के मनोविज्ञान को जिस रोचकता के साथ प्रस्तुत किया है, वह निश्चित रूप से काबिले-तारीफ है।

समय के विमर्श की हिंदी ग़ज़ल

ग़ज़ल एक पेचीदा सिन्फ (विधा) है। अपनी बाहरी संरचना में यह विधा बहुत आसान प्रतीत होती है। दो-दो मिसरों (पंक्तियों) में एक-एक शे'र का होते जाना बहुत सहज महसूस होता है। लेकिन जब ग़ज़ल लिखने वाले इस विधा की गहराई में उतरते हैं और इसकी बारीकियों को समझते हैं तो यह विधा (ग़ज़ल) बहुत मुश्किल प्रतीत होती है। ग़ज़ल की बहरों, अरकान, तगज़्ज़ुल को समझना तो कठिन होता ही है, एक विचार या फिर जीवन के किसी सूत्र को शे'र में व्यक्त करना और अंदाज़ में व्यक्त करना जटिल प्रक्रिया से गुजरना होता है। शे'र का हो जाना बड़ी बात नहीं होती। शे'र का प्रभावशाली होना महत्वपूर्ण होता है। इसलिए ग़ज़लकार अपना मुहावरा तलाश करने में उम्र खर्च कर देते हैं। प्रायः हर बड़ा कवि/शायर या ग़ज़लकार अपने अंदाज़े-बयां के लिए जाना जाता है। उर्दू में मीर, ग़ालिब, इक़बाल, फ़ैज़, फ़िराक़ जैसे शायर अपनी ग़ज़लगोई के साथ-साथ अपने अंदाज़े-बयां के लिए भी जाने जाते हैं। जदीद शायरी में नासिर काज़मी का अपना विशिष्ट स्थान है। उन्होंने जिस आसान भाषा (हिंदुस्तानी ज़बान) में ग़ज़लें लिखीं, वो उनका अंदाज़े-बयां बन गया। उर्दू में जो स्थान रुतबा नासिर काज़मी को हासिल है, हिंदी में वही स्थान दुष्यंत का है। नासिर उर्दू ग़ज़ल में जदीदियत के लिए मशक्कत करते रहे तो हिंदी में दुष्यंत ने ग़ज़ल के किवाड़ खोले। दुष्यंत अपनी ग़ज़ल के साथ हिंदी ग़ज़ल का तेवर और संस्कार भी लेकर आए।

दुष्यंत से पूर्व यह संशय बना रहा कि हिंदी ग़ज़ल कैसे लिखी जाए। दुष्यंत ने उस संशय को समाप्त कर दिया। दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल के लिए एक विश्वसनीय और पुख्ता जमीन तैयार की। यहां से हिंदी ग़ज़ल को न सिर्फ विस्तार का अवसर मिला बल्कि हिंदी ग़ज़ल में समाज की उपस्थिति को किसी जरूरी पाठ की तरह हासिल किया गया। वो दौर जब दुष्यंत ने ग़ज़लें लिखनी शुरू कीं, उर्दू ग़ज़ल में इश्क जैसा विषय केंद्र में था, जदीद शायर बेशक दुनिया के बाकी मसाइल पर भी शे'र कह रहे थे, फिर भी, इश्क महत्वपूर्ण विषय था। बिलकुल ऐसे वक्त में, दुष्यंत ने बड़े साहस के साथ, सियासत की विडम्बनाओं पर तीक्ष्णता से ग़ज़लें लिखीं। बेकस, बेबस, बेचैन और बेसहारा अवाम पर जब दुष्यंत ने ग़ज़लें लिखीं तो सबको हैरान करके रख दिया। जब उर्दू शायरी में अपनी जात की बात हो रही थी, महबूबा की बात हो रही थी, टूटने-बिखरने की बात हो रही थी तब, दुष्यंत की नजर कहीं और थी और वो कह रहे थे -

न हो कमीज़ तो पैरों से पेट ढक लेंगे
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफ़र के लिए।

शे'र को जरा महसूस करें, शे'र में तड़प-सी है। शेर में व्यंजना है। और यही व्यंजना, करुणा में तबदील होती है। शेरीयत की यह नई ढब थी जो दुष्यंत ने पैदा की।

दुष्यंत की ग़ज़ल का एक और शे'र है।

कल नुमाइश में मिला था चिथड़े में वो
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिंदोस्तान है।

शे'र में शे'र का होना एक बात होती है। लेकिन शे'र में कथा तत्व का होना बड़ी बात होती है। दुष्यंत ने अपनी ग़ज़लों के जरिए यह बात साबित की थी कि शे'र के अंदर व्याकुलता कैसे पैदा की जाती है। दुष्यंत ने हिंदी ग़ज़ल के लिए जो मुहावरा गढ़ा तथा जो भाषा ईजाद की, वो हिंदुस्तानी भाषा, हिंदी ग़ज़ल की भाषा बन गई। हिंदी ग़ज़ल का अर्थ महज इतना है कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली ग़ज़लें। भाषा वही जो दुष्यंत की ग़ज़लों की है। भाषा वही जो नासिर काज़मी और इब्ने इंशा की ग़ज़लों की है यानी, हिंदुस्तानी ज़बान। हिंदी ग़ज़ल से भ्रमित होकर कुछ ग़ज़लकारों ने शुद्ध हिंदी ग़ज़लें लिखीं। नतीजा यह निकला कि उनकी ग़ज़लों में हिंदी तो थी, ग़ज़ल गायब थी। हमें यह बात स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि हिंदी भाषा में जब ग़ज़ल आई तो वो अपने साथ ग़ज़ल का अनुशासन, मिज़ाज, तगज्जुल भी साथ लेकर आई। हमने उर्दू ग़ज़ल से बहुत कुछ हासिल किया लेकिन 'कथन' जैसा तत्व हमने अपना निर्मित किया। इसी कथन में समाज के अतिरिक्त, लोक जीवन की छवियां और अवाम के संघर्ष और तकलीफें शामिल हैं। देवेंद्र आर्य का एक शे'र है। छोटी बहर में यह शे'र लोक जीवन के फक्कड़पन को किस अंदाज़ में व्यक्त करता है। यही अंदाज़े-बयां है। शे'र है।

उलझन है बेचैनी है
साहब, थोड़ी खैनी है।

ग़ज़ल बेहद शाइस्ता और महीन विधा है। वृक्ष, हवा, धूप, समन्दर, पहाड़, नदी, रेत, पानी, आकाश, परिन्दे, सितारे, जुगनू ही नहीं, बेजान वस्तुएं भी ग़ज़ल के अश्आर में आकर सांस लेने लगती हैं। परिन्दे, संवेदना का प्रतीक बनकर, ग़ज़लों में निरंतर आते ही रहते हैं। हिंदी ग़ज़ल में ग़ज़लें सादगी से व्यक्त की जाती रही हैं। सादगी खुद मुहावरा बन जाती है और उस्लूब (शैली) भी।

राशिफल

मेष : स्थायी संपत्ति के मामले में कोई भी निर्णय सोच-समझकर लें। मानसिक व्यग्रता और शारीरिक अस्वस्थता रहेगी। विद्यार्थियों के लिए समय मध्यम कहा जा सकता है। आपका स्वाभिमान भंग होगा।

वृषभ : आर्थिक मामलों पर अधिक ध्यान देंगे आपको हरेक कार्य में सफलता मिलेगी। भाग्यवृद्धि का योग है। भाई-बंधुओं का सहयोग मिलेगा। प्रिय व्यक्ति का साथ और सार्वजनिक सम्मान मिलेगा। व्यापार में वृद्धि होगी तथा प्रतिस्पर्धियों को परास्त कर सकेंगे।

मिथुन : आर्थिक आयोजन सफल कर सकेंगे। मिष्ठान्न भोजन प्राप्त होगा। विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए मध्यम दिन है। स्नेहीजनों और मित्रों के साथ की मुलाकात से आनंद होगा। व्यवसाय में अनुकूल वातावरण रहेगा। आय में वृद्धि होगी।

कर्क : गणेशजी कहते हैं कि आज भावनाओं के प्रवाह में सराबोर रहेंगे और कुटुंबीजन, मित्र तथा सगे-सम्बंधी उसमें सहभागी बनेंगे। भेंट-सौगात की प्राप्ति होगी। स्वादिष्ट भोजन करने और बाहर घूमने जाने का आयोजन होगा।

सिंह : गलत दलीलबाजी और वाद-विवाद तथा संघर्ष खड़ा करेंगे। कोर्ट कचहरी के मामले में सावधानी रखने की गणेशजी की सलाह है। वाणी और व्यवहार में संयम रखना आवश्यक है। आय की अपेक्षा खर्च अधिक होगा।

कन्या : नौकरी पेशावालों को लाभ का अवसर मिलेगा। वैवाहिक जीवन में सुख-संतोष की अनुभूति होगी। पत्नी, पुत्र और बुजुर्गवर्ग की तरफ से लाभ होगा। मित्रों के साथ रमणीय पर्यटन होगा। स्त्री मित्र विशेष लाभकारी साबित होंगे।

तुला : कार्यक्षेत्र में आय वृद्धि एवं पदोन्नति के लिए संयोग निर्मित होंगे। माताजी की तरफ से लाभ होगा। गृह सजावट का कार्य हाथ में लेंगे। आफिस में उच्च पदाधिकारियों द्वारा काम की सराहना होगी और वे आपके प्रेरणा स्रोत बनेंगे।

वृश्चिक : नौकरी-व्यवसाय में अवरोध खड़े होंगे। उच्च पदाधिकारियों के साथ वाद-विवाद में न उतरने की गणेशजी की सलाह है। विदेशगमन के अवसर निर्मित होंगे।

धनु : गणेशजी बताते हैं कि आज आपको वाणी और क्रोध पर नियंत्रण रखना पड़ेगा, अन्यथा अनर्थ हो सकता है। सर्दी और कफ के कारण आपका स्वास्थ्य खराब होगा। मानसिक व्यग्रता का अनुभव करेंगे। धन खर्च में वृद्धि होगी।

मकर : दलाली, व्याज, कमीशन द्वारा आपकी आय में वृद्धि होगी। भागीदारी में लाभ होगा। सार्वजनिक जीवन में आपकी मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यात्रा की संभावना है। विपरीत लिंगीय व्यक्ति के प्रति आकर्षण होगा।

कुंभ : आज किए गए कार्य में आपको यश, कीर्ति और सफलता मिलेगी, ऐसा गणेशजी कहते हैं। परिवार में मेल-जोल बना रहेगा। शारीरिक और मानसिक स्वस्थता बनी रहेगी। आपके विचार और व्यवहार में भावुकता अधिक रहेगी।

मीन : विद्यार्थियों के लिए अच्छा दिन है। प्रेमीजनों और प्रिय व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त कर सकेंगे। कामुकता विशेष मात्रा में रहेगी। शेयर-सट्टा में लाभ होगा। मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए गणेशजी कहते हैं।

शब्द सामर्थ्य Shabd Samarth

बाएं से दाएं
1. चौड़ी और सपाट जमीन, रणभूमि 3. स्वरग्राम, संगीत के सात स्वरों का समूह 6. धूल का कण, किसी वस्तु का सूक्ष्मकण, धूल 7. हिम्मत, सामर्थ्य 8. अभ्यर्थना, रिसेप्शन, यथा अवसर पर पूछे जाने वाला मंगल कुशल 9. आपस का करार, निबटारा 10. वरदान, दुल्हा 12. भोग, ऐश्वर्य 13. कीमत, मूल्य 14. एक वाद्ययंत्र जिसे सपेरे बजाते हैं 16. समता, बराबरी 18. अश्लील, बेहुदा, अभद्र, घटिया 19. युक्ति, उपाय, ढंग 20. रिक्त, अपूर्ण।

ऊपर से नीचे
1. दोस्ती, मित्रता 2. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 4. बचाव, हिफाजत 5. मीठापन, मधुर होने का भाव 7. समुद्र 8. आत्मनिर्भर, जो दूसरे पर आश्रित न हो 9. रसवाला, रसदार 11. मां का बच्चों के प्रति प्रेम 13. खैरात, देने की क्रिया 15. दृष्टि, निगाह 16. वरिष्ठ, बुजुर्ग, चतुर 17. पराजय, हार।

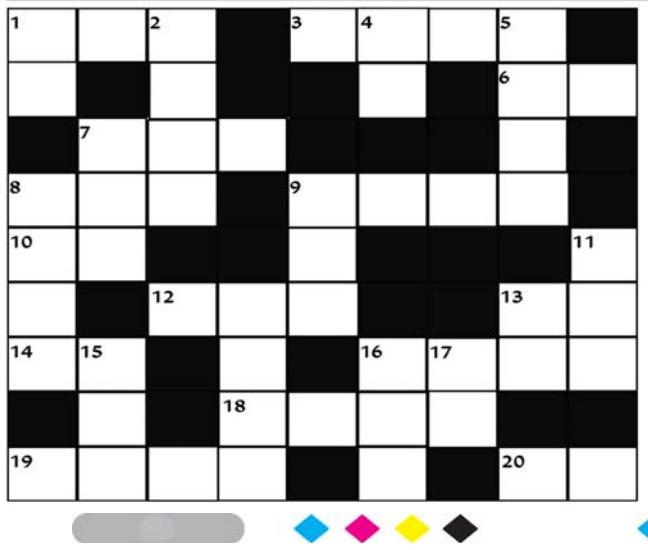

पिछले अंक का हल

ला	लू	प्र	सा	द	या	द	व	
प		ति			र	क्ष	क	
र	ह	मा	न					आ
वा			मि	थु	न		दा	स
ह	वा	ला	त		सी	ता		पा
	न				ब	क	वा	स
औ	र	त		म		त		
ला		बे	च	ना		व	च	न
द	ह	ला		ना	ग	र		दी

सू-दोकू

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.24 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6